SUBMISSION BY MEMBERS

MR. CHAIRMAN: Now, resumption of the discussion on the Indian Institutes of Information Technology Laws (Amendment) Bill, 2020...*(Interruptions)*... Who was speaking at that time? ...*(Interruptions)*... Mr. Minister...

SHRI JAIRAM RAMESH(Karnataka): Sir, the Leader of the Opposition would like to speak. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: If the LoP wants to say something, he would rise from his seat. Please sit down. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, the Leader of the Opposition would like to speak. ...*(Interruptions)*... You had promised yesterday...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: I would allow him. You may please sit down. ...*(Interruptions)*... Zero Hour and Special Mentions are over now. Mr. Azad, do you want to say something?

विपक्ष के नेता (श्री गुलाम नबी आज़ाद): जी हाँ, सर।...**(व्यवधान)**...

†**قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد):** جی ہاں سر ...(مداخلت)...

श्री सभापति: कृपया आप बोलिए। पुनिया जी, कृपया आप बैठिए। I will call you. Your name is there in the list.

श्री गुलाम नबी आज़ाद: माननीय चेयरमैन सर, सदन में पिछले दो दिनों में जो कुछ भी हुआ, मैं नहीं समझता कि उससे कोई भी खुश है चाहे उस साइड से या इस साइड से। यह हमारा परिवार है, बहुत बड़ा परिवार है, जो इस सदन में 130 करोड़ लोगों को represent करता है और आप परिवार के मुखिया हैं। घर के अंदर भी परिवार के मुखिया और परिवार के लोगों के बीच में झगड़े होते हैं। I am sorry that you are not feeling well. आपको प्रॉब्लम है, इसलिए आप आगे ही देखिए।

† **جناب غلام نبی آزاد:** مانئیے چئرمین سر، سدن میں پچھلے دو دنوں میں جو کچھ بھی ہوا، میں نہیں سمجھتا کہ اس سے کوئی بھی خوش ہے چاہے اس سائیڈ سے یا اس سائیڈ سے۔ یہ ہمارا پریوار ہے، بہت بڑا پریوار ہے، جو اس سدن میں 130 کروڑ کو represent کرتا ہے اور آپ پریوار کے مکھیہ ہیں، گھر کے اندر بھی پریوار کے مکھیہ اور پریوار کے لوگوں کے بیچ میں جھگڑے ہوتے ہیں۔ I am sorry that you are not feeling well. آپ کو پرابلم ہے، اس لیے آپ آگے ہی دیکھیئے۔

†Transliteration in Urdu script.

MR. CHAIRMAN: When I turn, I have a problem.

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सर, आप इस तरफ मत देखिए, आप सुविधा के अनुसार देखिए। इधर देखने की जरूरत नहीं है। मैं यहाँ जो भी बोलूँगा, यह न परिवार के मुखिया के खिलाफ है, न उनकी अनुपस्थिति में जो पार्लियामेंट का संचालन करते हैं या हमारे सरकार में रहने वाले साथी हैं, उनके खिलाफ है। यह मालूम नहीं है कि कब तक कोविड रहेगा, लेकिन पार्लियामेंट में मेरे सिर्फ पाँच महीने रह गए हैं, अगर तब तक कोविड रहा, तो यह मेरी आखिरी स्पीच भी हो सकती है। मैं थोड़ा इसके पीछे जाना चाहता हूँ।

†**جناب غلام نبی آزاد:** سر، آپ اس طرف مت دیکھئیے، آپ سُویدھا کے مطابق دیکھیئے۔ ادھر دیکھنے کی ضرورت نہیں ہے۔ میں یہاں جو بھی بولوں گا، یہ نہ پریوار کے مکھیہ کے خلاف ہے، نہ ان کی غیرموجودگی میں جو پارلیمنٹ کا سنچالن کرتے ہیں یا ہمارے سرکار میں رہنے والے ساتھی ہیں، ان کے خلاف ہے۔ یہ معلوم نہیں ہے کہ کب تک کووڈ رہے گا، لیکن پارلیمنٹ میں میرے صرف پانچ مہینے رہ گئے ہیں، اگر تب تک کووڈ رہا، تو یہ میری آخر اسپیچ بھی ہوسکتی ہے۔ میں تھوڑا اس کے پیچھے جانا چاہتا ہوں۔

श्री सभापति: मगर संक्षेप में, प्लीज़। मैं आपको आगे मौका दूँगा। Why are you thinking that it is his last speech?

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सर, इस सदन में यह टाइम की कमी ही हमारी सौतन बन गई है। इसी के कारण सब झगड़े हो गए। मैं उसी पर आता हूँ। मैं अपनी पहली बात को खत्म करके इसी पर आता हूँ। सर, ये लोग एक-एक स्टेट को represent करते हैं, कोई 20 करोड़ लोगों को represent करते हैं, हमारे यादव जी तो 22 करोड़ लोगों को represent करते हैं, मैं शायद सबसे छोटी स्टेट को represent करता हूँ... करोड़ों लोगों को जो represent करते हैं; इनके करोड़ों लोग इन्हें देखते हैं और वे इन्हें सुनना चाहते हैं। सर, यह टाइम तो अपने हाथ में है। हम चार घंटे की बजाय दस घंटे बैठें, एक महीने की बजाय दो महीने बैठें, लेकिन यहाँ पार्लियामेंट में आने के पीछे जो लक्ष्य है, चाहे उस तरफ के साथी हों या इस तरफ के साथी हों, वह लक्ष्य तो पूरा होना चाहिए। वह लक्ष्य दो मिनट में पूरा नहीं होता, तीन मिनट में नहीं होता। इतने बड़े विषय होते हैं; ऐसा लगता है कि हमारा सारा टाइम यहाँ नोक-झोंक में ही लग जाता है। एक-एक मिनट के लिए हम ऐसे लड़ते हैं, जैसे बॉर्डर पर लड़ रहे हैं। मेरा तो यह कहना होगा कि हम टाइम के बंधन में पार्लियामेंट की सीमाओं को न बाँधें और अगर हम हमारे एमपीज़ को, चाहे वे छोटी पार्टी से हों या बड़ी पार्टी से हों; टाइम के बंधन में न बाँधें, तो इससे हमारी de escalation 90 परसेंट होगी। जब एमपी यहाँ बोलता है, तो वह खुश होकर जाना चाहता है, लेकिन वह चेयर के साथ लड़ाई करके, झगड़ा करके, तू-तू, मैं-मैं करके

†Transliteration in Urdu script.

जाता है। सर, वैसे ही पब्लिक में political leaders का stock बहुत कम है, खत्म हो गया है और उस stock को हम यहाँ टाइम के झमेले में लड़-लड़कर ज़ीरो खुद बना देते हैं। मेरा चेयरमैन से सभी एमपीज़ की तरफ से निवेदन होगा, चाहे बड़ी पार्टी हो या छोटी पार्टी हो; इसे हम समय में न बाँधें, एक समुद्र को हम एक कुएं में बंद करने की कोशिश न करें। यह एक समुद्र है। यह मेरा आप सबसे निवेदन होगा।

सर, मैं दूसरी बात जो कहना चाहता था; यह तो आपने याद दिलाया, इसलिए मैंने इसका भी उल्लेख किया। सर, इंग्लिश में एक मुहावरा है, जिसे हम proverb कहते हैं - 'the last straw which broke the camel's back'. I think, day before yesterday was the last straw which broke the camel's back. इसके पीछे एक तो यह टाइम का सिस्टम है। कोई एक मिनट मिलने से नाराज़ है कि मैं अपनी बात पूरी नहीं कर पाया। आज स्टैडिंग कमिटीज़ के पास बिल नहीं जाते हैं, आज सेलेक्ट कमिटीज़ के पास बिल नहीं जाते हैं। यह भी उसके पीछे एक बहुत बड़ी धारणा है। सभी बिल पास करने की कोशिश की जाती है। जो एमपीज़ बोलना चाहते हैं, वे बोल नहीं पाते। सर, यह झगड़ा क्यों हुआ? नहीं होना चाहिए था। मैं इसे एप्रूव नहीं करता हूँ कि कोई माइक तोड़े या टेबल पर चढ़े, कोई एप्रूव नहीं करता है, लेकिन जैसा कि मैने कहा, the last straw which broke the camel's back; वह बड़ा जमा हो गया था, इसलिए जब वह बाहर निकलकर आया, तो बहुत बड़ा तूफान बन गया। मैंने माननीय चेयरमैन को भी बताया था, मैंने स्पीकर को भी बताया था कि लोक सभा के पास एक बड़ा advantage है कि वे तीन से छः बैठते हैं, वे तीन से नौ बजे तक भी बैठ सकते हैं, इसलिए एक हफ्ता तीन से छः उनको दे दीजिए और एक हफ्ता हमको दे दीजिए, ताकि हम भी नौ-दस बजे तक बैठ सकें, जितना बोलना है, बोल सकें। लेकिन वह माना नहीं गया। अब हमको चार घंटे में ही काम करना है; मैं चेयर और सरकार की मजबूरी भी जानता हूँ, लेकिन sense of House पर ही झगड़ा हो गया और मैं बार-बार कह चुका हूँ कि the sense of House does not mean numbers. फिर तो रूलिंग पार्टी वही होती। तब तक सरकार बनेगी ही नहीं, जब तक उसके पास नंबर नहीं होगा, फिर तो opposition... सर, sense of House, the majority of the political parties है। परसों के लिए मैं कहूँगा कि 18 पार्टीज़ एक साइड थीं और एक पार्टी एक साइड थी, क्योंकि चाहे बाकी इश्यूज़ पर साथ न हों, लेकिन उस विषय पर दो-तीन एनडीए की पार्टीज़ भी इस साइड थीं। एक दूसरी पार्टी से 18 पार्टीज़ एक साइड थीं और उसी पर सारा झगड़ा हो गया और उसके चलते...**(व्यवधान)**... मैं खत्म कर रहा हूँ।...**(व्यवधान)**...

†**جناب غلام نبی آزاد:** سر، اس سدن میں یہ ٹائم کی کمی ہی ہماری سوتن بن گئی ہے۔ اس کی وجہ سے سب جھگڑے ہوگئے ۔ میں اسی پر آتا ہوں۔ میں اپنی پہلی بات کو ختم کرکے اسی پر آتا ہوں۔ سر، یہ لوگ ایک ایک اسٹیٹ کو represent کرتے ہیں۔ کوئی 20 کروڑ لوگوں کو represent کرتے ہیں، ہمارے یادو جی تو بائیس کروڑ لوگوں کو

†Transliteration in Urdu script.

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

represent کرتے ہیں۔ میں شاید سب سے چھوٹی اسٹیٹ کو represent کرتا ہوں۔۔۔ کروڑوں لوگوں کو جوrepresent کرتے ہیں، ان کو کروڑوں لوگ دیکھتے ہیں اور وہ ان کو سننا چاہتے ہیں۔ سر، یہ ٹائم تو اپنے ہاتھ میں ہے۔ ہم چار گھنٹے کی بجائے دس گھنٹے بیٹھیں، ایک مہینے کی بجائے دو مہینے بیٹھیں، لیکن یہاں پارلیمنٹ میں آنے کے پیچھے جو لکشئے ہے، چاہے اس طرف کے ساتھی ہوں یا اس طرف کے ساتھی ہوں وہ لکشئے تو پورا ہونا چاہیئے۔ وہ لکشیے دو منٹ میں پورا نہیں ہوتا، تین منٹ میں نہیں ہوتا۔ اتنے بڑے موضوع ہوتے ہیں، ایسا لگتا ہے کہ ہمارا سارا ٹائم یہاں نوک جھونک میں ہی لگ جاتا ہے۔ ایک ایک منٹ کے لیے ہم ایسے لڑتے ہیں، جیسے بارڈر پر لڑرہے ہیں۔ میرا تو یہ کہنا ہوگا کہ ہم ٹائم کے بندھن میں پارلیمنٹ کی سیماؤں کو نہ باندھے اور اگر ہم ہمارے ایم پیز کو، چاہے وہ چھوٹی پارٹی سے ہوں یا بڑی پارٹی سے ہوں، ٹائم کے بندھن میں نہ باندھیں، تو اس سے ہماری de escalation نوّے فیصد ہوگی۔ جب ایم پی یہاں بولتا ہیں، تو وہ خوش ہوکر جانا چاہتا ہے، لیکن وہ چئیر کے ساتھ لڑائی کرکے، جھگڑا کرکے، تو تو، میں میں کرکے جاتا ہے۔ سر، ویسے ہی پبلک میں پبلک لیڈرس کا اسٹاک بہت کم ہے، ختم ہوگیا ہے اور اس اسٹاک کو ہم یہاں ٹائم کے جھمیلے میں لڑلڑکر زیرو خود بنادیتے ہیں۔ میرا چئیرمین صاحب سے بھی ایم پیز کی طرف سے نویدن ہوگا، چاہے بڑی پارٹی ہو یا چھوٹی پارٹی ہو، اسے ہم وقت میں نہ باندھیں، ایک سمندر کو ہم ایک کوئیں میں بند کرنے کی کوشش نہ کریں۔ یہ ایک سمندر ہے۔ یہ میرا آپ سب سے نویدن ہوگا۔

سر، میں دوسری بات جو کہنا چاہتا تھا، یہ تو آپ نے یاد دلایا، اس لیے میں نے اس کا بھی اَلیکھ کیا۔ سر، انگلش میں ایک محاورہ ہے، جسے ہم proverb کہتے ہیں۔ - the last straw which broke the camel's back. I think, day before yesterday was the last straw which broke the camel's back. اس کے پیچھے ایک تو یہ

ٹائم کا سسٹم ہے۔ کوئی ایک منٹ مہینے سے ناراض ہے کہ میں اپنی بات پوری نہیں کرپایا۔ آج اسٹینڈنگ کمیٹیز کے پاس بل نہیں جاتے ہیں، آج سلیکٹ کمیٹیز کے پاس بل نہیں جاتے ہیں۔ یہ بھی اس کے پیچھے ایک بہت بڑی دھارنا ہے۔ سبھی بل پاس کرنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ جو ایم پیز بولنا چاہتے ہیں، وہ بول نہیں پاتے۔ سر، یہ جھگڑہ کیوں ہوا؟ نہیں ہونا چاہیئے تھا۔ میں اسے ایپروُو نہیں کرتا ہوں کہ کوئی مائک توڑے یا ٹیبل پر چڑھے، کوئی ایپروُو نہیں کرتا ہے، لیکن جیسا کہ میں نے کہا، the last straw which broke the camel's back, وہ بڑا جمع ہوگیا تھا، اس لیے جب وہ باہر نکلکر آیا، تو بہت بڑا طوفان بن گیا۔ میں نے مانیئے چئیرمین کو بھی بتایا تھا، میں نے اسپیکر کو بھی بتایا تھا کہ لوک سبھا کے پاس ایک بڑا ایڈوانٹیج ہے کہ وہ تین سے چھ بیٹھتے ہیں، وہ تین سےنو بجے تک بھی بیٹھ سکتے ہیں، اس لیے ایک ہفتہ تین سے چھ ان کو دے دیجیئے اور ایک ہفتہ ہم کو دے دیجیئے، تاکہ ہم بھی نو دس بجے تک بیٹھ سکیں، جتنا بولنا ہے، بول سکیں۔ لیکن وہ مانا نہیں گیا۔ اب ہم کو چار گھنٹے میں ہی کام کرنا ہے، میں چئیر اور سرکار کی مجبوری بھی جانتا ہوں، لیکن sense of House پر ہی جھگڑا ہوگیا اور میں بار بار کہہ چکا ہوں کہ the sense of House does not mean numbers. پھر تو رولنگ پارٹی وہی ہوتی۔ تب تک سرکار بنے گی ہی نہیں، جب تک اس کے پاس نمبر نہیں ہوگا، پھر تو اپوزیشن... سر، sense of House, the majority of the political party ہے۔ پرسوں کے لیے میں کہوں گا کہ 18 پارٹیز ایک سائیڈ تھیں اور ایک پارٹی ایک سائیڈ تھی، کیوں کہ چاہے باقی ایشوز پر ساتھ نہ ہوں، لیکن اس موضوع پر دو تین این ڈی اے کی پارٹیز بھی اس سائیڈ تھیں۔ ایک دوسری پارٹی سے 18 پارٹیز ایک سائیڈ تھیں اور اسی پر سارا جھگڑا ہو گیا اور اس کے چلتے ...(مداخلت)... میں ختم کررہا ہوں ...(مداخلت)...

MR. CHAIRMAN: Are you going to give a judgment? ...*(Interruptions)*... Do you want to give a judgment? ...*(Interruptions)*... The Leader of the Opposition has got enough experience. He is capable of speaking. मैंने आपको रोका नहीं।...**(व्यवधान)**...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सर, मैं किसी की निंदा नहीं कर रहा हूँ। ...**(व्यवधान)**... मैं सिर्फ यही कहूँगा कि यह time constraint ही हमारी सबसे बड़ी लड़ाई का मुद्दा बन गया। ऐसे में बिल कैसे पास होगा? सर, सदन कैसे चलता है? जहाँ तक मेरा अपना 41 साल का इस सदन, उस सदन और तीसरे सदन, विधान सभा का अनुभव है, उसमें मैंने देखा है कि हिन्दुस्तान के संविधान के आधार पर, हिन्दुस्तान के कानून के आधार पर, हमारी इस पार्लियामेंट के प्रोसिज़र के आधार पर, established practices के आधार पर, established conventions के आधार पर co-ordination होना चाहिए। वह co-ordination तीन लेवल पर होनी चाहिए। First, इसमें गवर्नमेंट के अंदर भी co-ordination होनी चाहिए, पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर और जो उसके बिल्स हैं, उनके बीच में co-ordination होना चाहिए, अपोज़िशन और सरकार के बीच में co-ordination होना चाहिए, लेकिन सरकार और चेयर के बीच में co-ordination नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि यह बुरी तरह से suffered है, यह co-ordination ठीक नहीं है। अगर यह नहीं होता, तो उस बिल को पास करने की इतनी जल्दी नहीं होती। मुझे नहीं मालूम, सरकार के पास बहुमत था या नहीं था, लेकिन उसमें यह हुआ कि उसमें जो रिजॉल्यूशंस हैं, उन पर वोटिंग नहीं हो पाई। जो बिल क्लॉज़ बाई क्लॉज़ पास होना था, वह नहीं हो पाया। जो अमेंडमेंट्स दी गई थीं, उन पर डिविज़न होना चाहिए था। सर, डिविज़न बहुत जरूरी है। वह एमपी, जिसने अमेंडमेंट्स दी हैं या जिसका रिजॉल्यूशन है, अगर वह डिविज़न माँगता है और वह नहीं होता है, तो वह बिल ही पास नहीं हो सकता।

सर, मैं यहाँ अरुण जेटली जी द्वारा वर्ष 2016 में कही गई बात को क्वोट करना चाहता हूँ। He said, 'That the Government becomes illegitimate if the Speaker refuses the division of vote.' वे इसको 'illegitimate' कहते हैं। वर्ष 2016 में उत्तराखंड के अंदर, the Government of India went to the Supreme Court against the Uttarakhand High Court's order. उस पर क्या plea ली गई? The division demanded was not given. Government of India डिविज़न के बाद सुप्रीम कोर्ट तक पहुँच जाती है। ...**(व्यवधान)**...

†**جناب غلام نبی آزاد:** سر، میں کسی کی نِندا نہیں کررہا ہوں ...(مداخلت)... میں صرف یہی کہوں گا کہ یہ time constraint ہی ہماری سب سے بڑی لڑائی کا مدعہ بن گیا۔ ایسے میں بل کیسے پاس ہوگا؟ سر، سدن کیسے چلتا ہے؟

جہاں تک میرا اپنا 41 سال کا اس سدن، اُس سدن اور تیسرے سدن، ودھان سبھا کا تجربہ ہے، اس میں میں نے دیکھا ہے کہ ہندستان کے سمودھان کے آدھار پر، ہندستان کے قانون کے آدھار پر، ہماری اس پارلیمنٹ کے پروسیجر کے آدھار پر، established

†Transliteration in Urdu script.

practices کے آدھار پر، established conventions کے آدھار پر co-ordination ہونا چاہئیے۔ وہ co-ordination تین لیول پر ہونا چاہیئے۔ فرسٹ اس میں گورنمنٹ کے اندر بھی co-ordination ہونی چاہیئے، پارلیمنٹری افیئرس منسٹر اور جو اس کے بل ہیں، ان کے بیچ میں co-ordination ہونا چاہیئے،اپوزیشن اور سرکار کے بیچ میں کوآرڈینیشن ہونا چایئے۔ لیکن سرکار اور چئیر کے بیچ co-ordination نہیں ہونا چاہیئے۔ مجھے لگتا ہے کہ ی بری طرح سے suffered ہے، یہ co-ordination ٹھیک نہیں ہے۔ اگر یہ نہیں ہوتا ، تواس بل کو پاس کرنے کی اتنی جلدی نہیں ہوتی۔ مجھے نہیں معلوم، سرکار کے پاس بہومت تھا یا نہیں تھا، لیکن اس میں یہ ہوا کہ اس میں جو ریزولیوشنس ہیں، ان پر ووٹنگ نہیں ہوپائی۔ جو بل کلاز بائی کلاز پاس ہونا تھا، وہ نہیں ہوپایا۔ جو امینڈمنٹ دی گئیں تھیں، ان پر ڈویزن ہونا چاہیئے تھا سر ڈویزن بہت ضروری ہے۔ وہ ایم پی، جس نے امینڈمینٹس دی ہیں یا جس کا ریزولیوشن ہے، اگر وہ ڈویزن مانگتا ہے اور وہ نہیں ہوتا ہے، تو وہ بل ہی پاس نہیں ہوسکتا۔

سر، میں یہاں ارون جیٹلی جی کے ذریعہ سال 2016 میں کہی گئی بات کو کیوٹ کرنا چاہتا ہوں۔ He said, 'That the Government becomes illegitimate if the Speaker refuses the division of vote.' وہ اس کو illegitimate کہتے ہیں۔ سال 2016 میں اترکھنڈ کے اندر the Government of India went to the Supreme Court against the Uttarakhand High Court's order. The plea اس پر کیا لی گئی؟ division demanded was not given. Government of India ڈویزن کے بعد سپریم کورٹ تک پہنچ جاتی ہے۔ ...(مداخلت)...

MR. CHAIRMAN: Arun Jaitleyji is no more. He has also said that it is the tyranny of minority. ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA (Himachal Pradesh): Sir, he has not quoted Shri Arun Jaitley with disrespect. ...*(Interruptions)*...He quoted Mahatma Gandhi. ...*(Interruptions)*...He quoted Jawharlal Nehru. ...*(Interruptions)*...He has quoted Shri Arun Jaitley respectfully, not disrespectfully. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Azadji, please conclude. ...*(Interruptions)*... I cannot be dictated by you. ...*(Interruptions)*... I will not accept it. ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA: Everybody has a right to quote Shri Nehru and Mahatma Gandhi. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: That is what I am saying. There is nothing wrong. ...*(Interruptions)*... You must also remember that he also said that it is the tyranny of opposition. ...*(Interruptions)*... So, don't create controversy. ...*(Interruptions)*...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सर, मैं यहाँ एलओपी रहूँ या कोई दूसरा एलओपी रहे, लेकिन यहाँ कुछ सालों में एलओपी का स्तर भी बहुत नीचे गिर गया। पहले एलओपी पर कोई समय-सीमा नहीं थी। मैंने पिछले 35 सालों में तीन प्राइम मिनिस्टर्स के साथ पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर रहा, तब एलओपी पर कभी कोई बंदिश नहीं थी। यहाँ बोलने के लिए अरुण जेटली जी 10 दफा खड़े होते थे, सुषमा स्वराज जी 20 दफा खड़ी होती थीं। तब उन पर न तो बोलने की सीमा थी, न समय की सीमा थी, लेकिन अब हम भी सीमा में बँध गए और हमारा एलओपी न होने के बराबर हो गया। ये तमाम चीज़ें लोकतंत्र के फेवर में नहीं हैं।

†**جناب غلام نبی آزاد :** سر، میں یہاں ایل۔او۔پی۔ رہوں یا کوئی دوسرا ایل۔او۔پی۔ رہے، لیکن یہاں کچھ سالوں میں ایل۔او۔پی۔ کا پیمانہ بھی بہت نیچے گر گیا۔ پہلے ایل۔او۔پی۔ پر کوئی وقت کی پابندی نہیں تھی۔ میں نے پچھلے 35 سالوں میں تین پرائم منسٹرس کے ساتھ پارلیمنٹری افیئرس منسٹر رہا، تب ایل۔او۔پی۔ پر کبھی کوئی بندش نہیں تھی۔ یہاں بولنے کے لئے ارون جیٹلی جی دس دفعہ کھڑے ہوتے تھے، سشما سوراج جی بیس دفعہ کھڑی ہوتی تھیں۔ تب ان پر نہ تو بولنے کی سیما تھی، نہ وقت کی سیما تھی، لیکن اب ہم بھی سیما میں بندھ گئے اور ہمارا ایل۔او۔پی نہ ہونے کے برابر ہو گیا۔ یہ تمام چیزیں لوک تنتر کے حق میں نہیں ہے۔

†Transliteration in Urdu script.

MR. CHAIRMAN: Thank You.

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सर, मैं अब आखिर में एक-दो लाइंस में रिक्वेस्ट करूँगा, जो हमारी माँग है। सरकार ने कल कैबिनेट में कुछ एमएसपी अनाउंस किया। यह भी कुछ co-ordination की कमी है, उस मिनिस्टर के बीच में, कैबिनेट के बीच में और प्रधान मंत्री के बीच में। परसों जब आप बिल लाए थे, तब सारी चर्चा एमएसपी पर हो रही थी और उस वक्त आपने एमएसपी अनाउंस नहीं किया। अब जब हंगामा हो गया, तोड़-फोड़ हो गई, ये तमाम चीज़ें हो गईं उसके बाद आप एमएसपी लाते हैं। ...**(व्यवधान)**... यह एमएसपी तो पहले लाना चाहिए, कैबिनेट की मीटिंग पहले करनी चाहिए।

†**جناب غلام نبی آزاد :** سر، میں اب آخر میں ایک دو لائنس میں درخواست کروں گا، جو ہماری مانگ ہے۔ سرکار نے کل کیبنیٹ میں کچھ ایم۔ایس۔پی۔ اناؤنس کیا۔ یہ بھی کچھ کو-آرڈنیشن کی کمی ہے، اس منسٹر کے بیچ میں، کیبنیٹ کے بیچ میں اور پردھان منتری کے بیچ میں۔ پرسوں جب اپ بل لائے تھے، تب ساری چرچہ ایم۔ایس۔پی پر ہو رہی تھی اور اس وقت آپ نے ایم۔ایس۔پی۔ اناؤنس نہیں کیا۔ اب جب ہنگامہ ہو گیا، توڑ پھوڑ ہو گئی، یہ تمام چیزیں ہو گئیں، اس کے بعد آپ ایم۔ایل۔سی۔ لاتے ہیں ...(مداخلت)... یہ ایم۔ایل۔سی۔ تو پہلے لانا چاہئے، کیبنیٹ کی میٹنگ پہلے کرنی چاہئے۔

MR. CHAIRMAN: Azadji, please conclude. ...*(Interruptions)*...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: आज गवर्नमेंट का advertisement निकला है- 'One-Nation-One-Market'. हमें कोई आपत्ति नहीं है। आपने पहले भी कहा है, 'One-Nation-One-Tax' , 'One-Nation-One-Ration Card.' भगवान के लिए, खुदा के लिए 'one-nation-one-party' की तरफ मत जाइए, वरना यह हटकर रहा है। ...**(व्यवधान)**...

†**جناب غلام نبی آزاد :** آج گوورنمینٹ کا advertisement نکلا ہے، 'One-Nation-One-Market'. ہمیں کوئی آپتّی نہیں ہے۔ آپ نے پہلے بھی کہا ہے، 'One-Nation-One-Tax', 'One-Nation-One-Ration Card.' بھگوان کے لئے، خدا کے لئے 'one-nation-one-party' کی طرف مت جائیے، ورنہ یہ ہٹ کر رہا ہے ...(مداخلت)...

MR. CHAIRMAN: Very good. यह अच्छा है। ...**(व्यवधान)**... इससे सबको सहमत होना चाहिए।

---

†Transliteration in Urdu script.

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सर, लास्ट में मेरा इस गवर्नमेंट से किसानों की तीन चीज़ों के बारे में निवेदन है। जब तक ये तीन चीज़ें नहीं होती हैं -- कि गवर्नमेंट को एक दूसरा बिल लाना चाहिए। जिसमें प्राइवेट प्लेयर्स पर यह अंकुश लगना चाहिए कि वे एमएसपी से नीचे नहीं खरीदें। That is number one. ...(**व्यवधान**)...

†**جناب غلام نبی آزاد** : سر، لاسٹ میں میرا اس گوورنمینٹ سے کسانوں کی تین چیزوں کے بارے میں نویدن ہے۔ جب تک یہ تین چیزیں نہیں ہوتی ہیں – کہ گوورنمینٹ کو ایک دوسرا بل لانا چاہئے۔ جس میں پرائیویٹ پلیئرس پر یہ بندش لگنی چاہئے کہ وہ ایم۔ایس۔پی۔ سے نیچے نہیں خریدیں۔ ٹیٹ از نمبر ون ... (مداخلت) ...

MR. CHAIRMAN: Right. प्लीज़, आप बैठ जाइए।

श्री गुलाम नबी आज़ाद: मेरे भाई सदन के बाहर हम क्या-क्या बोलते हैं, मैं उसकी बात नहीं करता हूं। सदन के अंदर बिल लाना चाहिए, जिसमें आप कोर्ट में जा सकते हैं, बाहर कहने पर हम कोर्ट नहीं जा सकते।

दूसरा यह कि एमएसपी जो भी announce होना चाहिए, वह "C2" स्वामीनाथन फॉर्मूला पर होना चाहिए।

†**جناب غلام نبی آزاد** : میرے بھائی سدن کے باہر ہم کیا کیا بولتے ہیں، میں اس کی بات نہیں کرتا ہوں۔ سدن کے اندر بل لانا چاہئے، جس میں آپ کورٹ میں جا سکتے ہیں، باہر کہنے پر ہم کورٹ نہیں جا سکتے۔

دوسرا یہ کہ ایم۔ایس۔پی۔ جو بھی اناؤنس ہونا چاہئے، 'سی-2' سوامی ناتھن فارمولہ پر ہونا چاہئے۔

MR. CHAIRMAN: Right.

एक माननीय सदस्य: वही हुआ है।

श्री सभापति: प्लीज़, आप बात मत कीजिए।

श्री गुलाम नबी आज़ाद: तीसरा यह कि स्टेट गवर्नमेंट और फूड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया किसी भी एजेंसी के द्वारा जो खरीद करेगी, वह एमएसपी से नीचे नहीं होनी चाहिए।

---

†Transliteration in Urdu script.

†**جناب غلام نبی آزاد :** تیسرا یہ کہ اسٹیٹ گورنمینٹ اور فوڈ کارپوریشن آف انڈیا کسی بھی ایجنسی کے ذریعےجو خرید کرے گی، وہ ایم.ایس.پی. سے نیچے ہونی چاہئے۔

MR. CHAIRMAN: Right.

श्री गुलाम नबी आज़ाद: उसके साथ ही हमारे जो colleagues हैं, जिनको rest of the Session के लिए suspend किया गया है, उनका भी वह आदेश वापस लेना चाहिए। ये तीन चीज़ें जो किसानों से संबंधित हैं...

†**جناب غلام نبی آزاد :** میرے اس کے ساتھ ہی ہمارے جو colleagues ہیں، جن کو rest of the Session کے لئے سسپینڈ کیا ہے، ان کا بھی وہ آرڈر واپس لینا چاہئے۔ یہ تین چیزیں جو کسانوں سے سمبندھت ہیں۔

MR. CHAIRMAN: Right.

श्री गुलाम नबी आज़ाद: जब तक सरकार इनको वापस नहीं लेती है, हम सत्र का boycott करते हैं। ...(**व्यवधान**)...

†**جناب غلام نبی آزاد :** جب تک سرکار ان کو واپس نہیں لیتی ہے، ہم سیشن کا بائیکاٹ کرتے ہیں ... (مداخلت) ...

श्री सभापति: बीच में ऐसे बोलना ठीक नहीं है।

SHRI BHUPENDER YADAV(Rajasthan): Sir, …

MR. CHAIRMAN: I am just coming to you. If the LoP has made a statement… Bhupenderji, please.

SHRI BHUPENDER YADAV: Sir, I have a point of order.

MR. CHAIRMAN: Please.

श्री भूपेन्द्र यादव: सर, गुलाम नबी जी ने जो विषय उठाया है...

SHRI K.C. VENUGOPAL(Rajasthan): Sir, ...*(Interruptions)*...

श्री सभापति: आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... I have not called you. …*(Interruptions)*.. There is no debate going on. …*(Interruptions)*.. Debate is already over. He has announced it. ..*(Interruptions)*..

---

†Transliteration in Urdu script.

(At this stage, some hon. Members left the Chamber)

SHRIMATI ARPITA GHOSH(West Bengal):*

MR. CHAIRMAN: No, no; please. ...*(Interruptions)*... प्लीज़, आप लोग बैठ जाइए। This is not the way. It will not go on record. ...*(Interruptions)*... It will not go on record, Arpitaji. ...*(Interruptions)*... This is not the way. ...*(Interruptions)*... It will not go on record. ...*(Interruptions)*... Let the media and let everybody note that this type of bizarre slogans are not allowed in the House. ...*(Interruptions)*...

SHRI MD. NADIMUL HAQUE(West Bengal): Sir, ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: This is not your seat. Go back to your seat. ...*(Interruptions)*... No; I will not allow you. ...*(Interruptions)*...This is not the way. ...*(Interruptions)*... I will not allow you. ...*(Interruptions)*... Go to your seat. ...*(Interruptions)*... Go to your seat first. ...*(Interruptions)*... Go to your seat. ...*(Interruptions)*...

Hon. Members, I have something to say before the Government's response. ...*(Interruptions)*... I have something to say before... Ram Gopalji, do you want to say something?

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश): महोदय, जो कुछ पिछले दो दिनों में हुआ, उससे कोई सहमत नहीं हो सकता और आज उससे मेरा मन दुखी भी है। इस पूरे एपिसोड में एक चीज़ अवश्य ऐसी रही जिसके लिए मैं सत्ता पक्ष के सदस्यों को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने बहुत संयम बरता और किसी तरह की कोई बात नहीं कही, लेकिन एक चूक संसदीय कार्य मंत्री जी से हुई, वे हमारे मित्र हैं, बहुत अच्छे आदमी हैं। एक स्थिति ऐसी बन सकती थी कि जब वे चेयर से यह कह सकते थे कि दस मिनट के लिए सदन की कार्यवाही स्थगित कर दें और विपक्ष के नेताओं से बात करके आगे कार्यवाही करें।

MR. CHAIRMAN: Right.

प्रो. राम गोपाल यादव: अब जो कुछ हुआ, कभी-कभी ऐसा होता है। अतीत में भी हुआ है, यहां नहीं... यहां भी हुआ है, लेकिन मैं पुरानी बात कह रहा हूं। वर्ष 1907 में जब सूरत में तिलक साहब और गोखले जी के बीच में जो हुआ तो पट्टाभि सीतारमैया जी ने उस जूतमपैजार को लेकर कहा कि 'When tempers run high, even great men lose balance.' हम तो बहुत छोटे लोग हैं, लेकिन चेयर बहुत बड़ी है, हम चेयर पर कभी उंगली उठा भी नहीं सकते। मैं पोलिटिकल साइंस का स्टूडेंट रहा हूं और मैं जानता हूं कि इसका महत्व क्या है। फिर भी मैं यह अपील

*Not recorded.

ज़रूर करना चाहूंगा कि गलती हुई है, विपक्ष के लोगों से भी, और जो बड़े होते हैं उनका दिल और बड़ा होना चाहिए।

श्री सभापति: राम गोपाल जी, right. हम आपकी बात समझ रहे हैं।

प्रो. राम गोपाल यादव: "क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात।" इसलिए मेरा अनुरोध है कि जो आपने लोगों के विरुद्ध कार्रवाई की है, आप उनका suspension रद्द कर दें और अगर आप चाहें, तो मैं आप से सम्पूर्ण सदस्यों की ओर से माफी मांगता हूं, apologize करता हूं।

MR. CHAIRMAN: Thank you Ram Gopalji. Keshav Raoji. Please, no bhashan, only suggestions.

DR. K. KESHAVA RAO (Telangana): I would simply make some points.

Sir, the great respect that we have for you needs no repetition at all and, particularly, me. But the question is, what happened two days back is condemnable, and we are all sorry for it. That we know; we share your view. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please.

DR. K. KESHAVA RAO: But one thing which has not been understood yesterday is 'what exactly happened.' Up to one o'clock, everything went right. It is only at one o'clock when they wanted an extension of time, all these kinds of disturbances came in. Why? It is because somebody felt, 'sense of the House is not in favour of an extension'. While the Ruling Party thought that they have the number, that is they have the majority. In his own wisdom, the Deputy Chairman had taken a stand. It was challenged and not only was it challenged, we asked for a division. Sir, if you see Rule 252. Today 'The Hindu' gave an editorial, bashing us all. We are feeling so bad about what exactly Hindu wrote.

MR. CHAIRMAN: Right, Keshav Rajoji.

DR. K. KESHAVA RAO: That is why we asked for division. Even yesterday, Sir, you had moved the Suspension Motion. You had moved the Suspension Motion and we asked for the division. You did not give us. Rule 252 says, you should give three minutes' time for division. The time is also there in Rule 252(4)(c) that you should give into division. So, Sir, as you are pained, and whenever you use the words that 'you are pained', we really feel pained. But, at the same time, you are not giving us time to express our pain while your pain is being expressed.

MR. CHAIRMAN: Right, Keshav Rajoji.

DR. K. KESHAVA RAO: Sir, in the last, again, I join Prof. Ram Gopalji to say that under Rule 256, under which the Law Minister says that they have suspended us, under Rule 256 (2), you have a right to terminate it on the Motion. Now, our request here is that it may be taken as a Motion. You have that right in the Rules. That may be taken and the suspension be terminated.

MR. CHAIRMAN: Shri Tiruchi Siva. Only suggestion, please. What is your suggestion?

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Yes, Sir.

We wholeheartedly agree, Sir, that the Chair has exhorbitant powers. At the same time, the Members have also some rights. Sir, two days before the manner in which the two important Bills were passed in this House was unprecedented, and a Member who has moved an Amendment must be given an opportunity to move that, to make a comment or speech on that and then when it is put to vote, if the Member asks for a division, it must be allowed. Sir, repeatedly, we were asking for that. It was totally denied and our basic democratic rights ...

MR. CHAIRMAN: What is your suggestion?

SHRI TIRUCHI SIVA: So, Sir, we were agonized and it is condemnable. I think, it doesn't reflect precedents of this august House, and so also the incidents that happened after that were triggered only by the way we were treated. The Bill was not passed in the proper manner. The Members were not listened to, and we stand by the Opposition. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Right. Before the Ministers reply, I have some observations to make from the Chair because the Chair has been dragged into this unnecessarily. ...*(Interruptions)*... I am not giving any permission when I am on my legs.

What I am saying, the people are not able to hear. I said, the Chair has been dragged. That is why I will make some remarks and then allow the Government to give their version and then finally decide it. It is between the Government and the Opposition and the House. I don't come in the way. You don't want any action! Okay. You decide. You want any action, you decide. You want to withdraw the action, you decide. You

want to increase this, all these things are within the House powers. My point is very simple. ...*(Interruptions)*... नहीं, मैं खड़ा हूं। ...*(Interruptions)*... This is about myself. I am not giving explanation on behalf of the Government. I will never give it also. That is for the Government and the Ruling Party, whatever they want to say. The Leader of the Opposition has made certain observations. I know him very well. He is a very experienced man, very sober, and also very gentle. Subsequently, Ram Gopal Yadavji made some very good suggestions. Then, Keshava Raoji also expressed concern and agony, as also Mr. Siva. My point is, at no time, the Chair -- Chair is not the Chairman alone; Chair is also the Deputy Chairman and the Panel of Vice-Chairmen -- should be dragged into this controversy. Let me say that from my side. Then you said 'unprecedented'. What is unprecedented? Fifteen Bills have been passed in the din, in this House and in the other House. If you want instances, I would give them, but I don't want to do that. I can make it available to Members later. Bills have been passed in the din in the recent past, before I became the Chairman, including important Bills.

Then, talking about suspension, this is not the first time. I am not happy about the suspensions. After all, they are my Members, they are our countrymen. The action is on their conduct, not the person. Try to understand that. We don't have anything against any Member as far as I am concerned. I have a long list of how people have been suspended in this House and in the other House. I am not using that example to justify things. I was convinced about the Minister's Motion and that is why I allowed it. And then, at no time, so far, has there been a division on the decision of suspension. If there are any shortcomings in the observations, you can write to me or meet me later. I am always ready to be corrected. Then, coming to the suspension of a Member who has been named by the Chair, the Rule says, "If a Member is so named by the Chairman he shall forthwith put the question on a motion being made, no amendment, adjournment or debate being allowed, that the Member (naming him) be suspended from the service of the Council for a period not exceeding the remainder of the Session." So, this was done as per the rules. That is my observation and my ruling also.

Coming to the issue of not allowing the Motion, the rule clearly says that it should be a resolution to remove the Deputy Chairman, and not a motion. The Opposition or any Member has got a right to move a resolution, but if you go through the text, or the beginning itself, it is a No Confidence 'Motion'. It should have been

[Mr. Chairman]

a resolution. I am not on the technical point alone. Article 90 of the Constitution says, "(c) may be removed from his office by a resolution of the Council passed by a majority of all the then members of the Council: Provided that no resolution for the purpose of clause (c) shall be moved unless at least fourteen days notice has been given of the intention to move the resolution." There was no 14 days' prior notice. That is clear. That is the rule. At any time, if you have the numbers. ...*(Interruptions)*...

DR. K. KESHAVA RAO: No, Sir. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please wait. Let me complete.

DR. K. KESHAVA RAO: Sir, 14 days are not there in this Session.. ....*(Interruptions)*... How have they continued?

MR. CHAIRMAN: Yes, agreed.

DR. K. KESHAVA RAO: So you can have the power.. ...*(Interruptions)*... to remove them from House. That is your judgement.

MR. CHAIRMAN: Yes, you are right. It is not judgement, that is the rule. The rule says, '14 days'. He is right. After 14 days, we have to take up that resolution if the resolution is in order. Now, only two or three days have gone by since I received the notice. Now, one, the notice is not in order because it mentions 'Motion' and not 'Resolution' and, second is the 14 days' time. Now, the interpretation is, within that time-period, the Deputy Chairman shall not preside over the House. That is wrong. That would be after I agree to take it up for consideration. When the resolution is under the consideration of the House, the person against whom the resolution has been moved is not supposed to preside over the House. That is the rule position. Please try to understand.

Then, coming to the issue, people are trying to put the blame on the Chair for extending the time of the House. Members may ask for extension of time, or may say that the time is sufficient, whatever it may be, and then the Chair would come to a conclusion, because the Chair is guided by the time allotted. The time allotted was four hour. According to the information that we have, Members who had given their names were allowed to speak. All Members, who have given the names, have been allowed to speak. So, Members spoke according to the time allotted to their parties. That is one.

Secondly, the Minister was to reply. So, the Deputy Chairman asked the Minister to give the reply and then go ahead. Then, I come to the issues raised with regard to 'division'. Yes; Members have a right to ask for division on different occasions. On that occasion also, they asked for division. The proceedings say, thirteen times the Deputy Chairman, from here, said, "Please go to your seats; I will allow division". You can verify it on record. If there is something wrong, you can again bring it to our notice and we can rectify the mistakes for future. Thirteen times! 13 बार उन्होंने यहां से announce किया। ...**(व्यवधान)**... But they have not gone. That is as far as the procedures are concerned. Now, I give the instances where Members of different parties, including the ruling party, were suspended earlier. Ruling party Members were also suspended in the House when the House had taken up a particular resolution. Secondly, there are a number of instances where the House has passed the Bills without division, in din also. It is not a healthy thing; I do agree. But there are a number of instances. Thirdly, the Deputy Chairman gave a caution and told them thirteen times. I don't want to prolong it from my side. I am coming to what Ram Gopalji, Keshava Raoji and others have said. To err is human. Emotions में थोड़ा हो गया। I am happy that, at least, some leaders said what happened was not good, but some leaders are justifying it. It is a different matter. I have not named anybody; I don't want to name anybody. Please read today's newspapers. In the heat or, sometimes, in emotion, the Members do something and then, later on, realizing it, they say that they should not have done it or make a statement that they should not have done it. But you go through today's newspapers. The Indian Express has carried an interview of all the eight Members who have been suspended. They all justified it. They not only justified it, they said ...*(Interruptions)*... प्लीज़, ऐसा मत करिए। We are on an emotive issue. They not only justified it, but said what wrong in that was and some of them have also confirmed that they have done it that they went to the Well. What is that? ...*(Interruptions)*... I am not saying it this way or that way. ...*(Interruptions)*... जया जी, प्लीज़ ऐसा मत करिए। मैंने सबको रोका है। Even I have asked the Minister. ...*(Interruptions)*...

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश): वे बोले जा रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति: बोल रहे हैं तो रिकॉर्ड में रहेगा। आपने कुछ बोला, वे भी बोल रहे हैं। दोनों को नहीं बोलना चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती जया बच्चन: इनकी वजह से ...**(व्यवधान)**...

10.00 A.M.

श्री सभापति: किसकी वजह से क्या हुआ, वह देशवासी तय करेंगे, देश की जनता तय करेगी। Then, getting onto the Table and dancing; nothing wrong! Tearing the papers; nothing wrong! Throwing them into the House; nothing wrong! Going to the Deputy Chairman; this side and that side! Some Members justified all this. I cannot justify it. I do agree with Ram Gopalji that somebody has done it on the spur of the moment or sometimes it happens emotionally; I do agree. If they realize, then that is a different matter and the Chair or the House or the parties should take note of that. Four hours were allocated and every party participated. Bills were passed in din earlier also. So, don't try to put the blame on the Chair or whoever was presiding over the Chair. The Deputy Chairman, I must again put it on record, acted with utmost restraint. ...*(Interruptions)*... That is your view. He handled the situation in a very deft manner.

And, then, if some people feel, "whether my way or highway", that is not the way. I will not accept it. You have the numbers. You should stay in your seat, ask for division, and if the Deputy Chairman has not allowed the division, then, I would...*(Interruptions)*... Please, when the Chair is on his legs...*(Interruptions)*... When the time has exhausted, when he tells you to go to your seats and ask for division, you don't bother. Now, you say that the Government did not have the numbers. I don't want to get into that. That is not my business, whether the Government has the numbers or does not have numbers, they will say that. When the occasion comes, it can be proved. Even today or tomorrow, at the earliest, if there is an occasion, if a Member asks for division as per the rules, the Deputy Chairman will definitely allow it and it can be proved as to who has the numbers and who does not have numbers and all.

Then, I come to the last point. I don't want to take further time. We are also pained. We are also human beings. We are doing our duty. What is happening has an effect on our health also and the health of many of the Members. Why don't you think about that also? Moreover, there is a general COVID instruction for the people. I did not know that this situation was going to come. Three days back, I had said it in the House to please follow the guidelines, keep distance and also wear masks for future. Then, what happened yesterday, in the backdrop of that, it is totally unsustainable. Then, I have directed the Secretary-General today. The entire campus is in the administrative control of the Speaker. As the Chairman, I have directed my Secretary-General to get in touch with the Lok Sabha Secretariat and see to it that proper care

is taken about the people who are protesting, though the Secretary-General reminded me and also showed me on 13th of this month, before the start of the Session -- at that time, no dispute or no hungama was there -- the rule that Members cannot use the precincts of the Parliament House for any demonstration, dharna, strike, fast or for the purpose of performing a religious ceremony also. That is the instruction. Keeping that in view, I appeal to the Members to follow the instructions. Whatever you want to say or do, do it democratically and also follow the health advisory. It is in your own interest and also in the interest of others, and also in the interest of the people of the country. Democracy means debate, discussion and decision, not disruption. Now, the Leader of the House...*(Interruptions)*...

SHRI TIRUCHI SIVA: Sir, in protest we are walking out...*(Interruptions)*...for the entire Session. ...*(Interruptions)*...

प्रो. राम गोपाल यादव: सभापति महोदय, आपने मेरी प्रार्थना...**(व्यवधान)**...

(At this stage, some hon. Members left the Chamber)

SHRI H.D. DEVEGOWDA(Karnataka): Sir, I want to say something.

MR. CHAIRMAN: Let it be over. There cannot be a remark on remarks of the Chair. ...*(Interruptions)*... I will give you a chance. Now, the Leader of the House.

सभा के नेता (श्री थावरचन्द गहलोत): माननीय सभापति महोदय, आपने नेता प्रतिपक्ष को बोलने का अवसर दिया और उन्होंने अपनी बातें रखीं। ...**(व्यवधान)**...

SHRI H.D. DEVEGOWDA: Sir, please allow me.

MR. CHAIRMAN: I will give you an opportunity. The Leader of the House is speaking.

श्री थावरचन्द गहलोत: दो दिन पूर्व की जो घटना है, उन्होंने उसको दुखद बताया, परंतु दुखद बताने के साथ ही साथ उसको सही ठहराने की कोशिश की और आसन्दी से जो-जो निर्णय हुए, उनको गलत ठहराने की कोशिश की।...**(व्यवधान)**...

SHRI H.D. DEVEGOWDA: Sir...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: I will give you an opportunity. The Leader of the House is on his legs.

SHRI H.D. DEVEGOWDA: Sir, I will take just one minute.

MR. CHAIRMAN: Okay.

SHRI H.D. DEVEGOWDA: Sir, I would like to make a request to the Government, the Opposition and you. In my 60 years of experience, I have seen such circumstances in Bengaluru. As an Opposition leader, I worked. I would request you that the Government should also come to some understanding. Both the Opposition and the Government should sit together and help you to run the House. With all sincerity, I am requesting you. I know you. I have seen the circumstances. On 20th, when I came here and took the oath, whatever expression you had made, I am supremely happy. The only thing is whether we have come to a breaking point. No. Democracy should work. Cooperation of the Opposition is not the question of numerical strength. I will tell you when one Member, Mr. Vatal Nagaraj, was suspended, I allowed the Government to run the House smoothly, withdrawing the decision made by the Speaker. It is not the Speaker; it is the Government stand. I told that to Devaraja Urs. With experience, I tell you this. If you want to run the House, please, I am watching every day, we have not come here for protest. Sir, everybody is sincere. As far as the question of any Bill is concerned, 'x' may say something, 'y' may say something, but, ultimately, the decision of the House, we have to accept. Please think over it. ...(Interruptions)..

MR. CHAIRMAN: He is saying something. Let him complete.

SHRI H.D. DEVEGOWDA: I appeal to you to think over it. I was watching the Deputy Chairman. Such a thing, I have not seen.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Devegowda ji. Now, the Parliamentary Affairs Minister, Shri Pralhad Joshi.

SHRI PRAFUL PATEL (Maharashtra): Sir, please allow me to speak. ...*(Interruptions)*...

SHRI H.D. DEVEGOWDA: I appeal to the Government... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Okay, Devegowda ji, I take it in good spirit. ...*(Interruptions)*... Now, Shri Pralhad Joshi, Parliamentary Affairs Minister. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, please allow me. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: I will allow you. Please sit down. I will allow you. Please don't

force me and say hear me first and then others. ऐसा कैसे होता है? There is the Chair who has to regulate the House. The Parliamentary Affairs Minister wants to say something.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS; THE MINISTER OF COAL; AND THE MINISTER OF MINES (SHRI PRALHAD JOSHI): Sir, you have expressed your agony and pain, and, equally, we are also pained. In democracy, both the Opposition and the Ruling Party should discuss together, as you rightly said. Ghulam Nabi Azad ji raised a few issues. First, he raised the issue of time restriction. उन्होंने कहा कि समय का restriction नहीं रहना चाहिए। सर, मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि जो समय का restriction है, यह हमारे आने के बाद या आपके आने के बाद से नहीं हुआ है, पहले से ही समय का restriction है ही, क्योंकि we have got some limitations.

I would also like to put it on record that many leaders have personally spoken to me and they have told to conclude it as early as possible. We work under your leadership and guidance, and, I always take your guidance. You were the National President of the Party when I was the District President. I always take your advice and as per your advice to talk to all other leaders. When they suggested early conclusion, I said, "If you want to conclude early, then, regarding the discussion of Bills, it all depends on you, how much time should be allocated for the discussion". The timing is allocated in the Business Advisory Committee and that is followed. Even for the Bills which were passed day before yesterday, four hours were allocated. Exact at 9.30 in the morning, you started the discussion and till 1 o'clock, it went on. At 1 o'clock, I requested for the extension of time till the disposal of those two particular Bills.

May I ask, through you, Sir, is it the first time that we have extended the timing of the House? Many times, even in this current Session, we have extended the time of the sitting twice or thrice till, 1.30 or 1.45 p.m. We have done that, Sir. The intention of the Government was that since the discussion was complete, as per the decision in the Business Advisory Committee, we wanted to complete it. They are talking about the division. As soon as I requested for the extension of time, the Members were in the Well. I appeal to them, through you, to look at the proceedings which have been recorded. As soon as I said, they came into the Well and the first person who was to move the Resolution for sending it to the Committee, whose seat is allocated in the gallery at the top, but he was here in this Well, and, he was saying -- of course, it has not gone on record -- "Sir, you please wait; I will go and move it". But even then he did not go and move the same. These are all the things. When the procedure to move

[Shri Pralhad Joshi]

the Resolution for sending it to the Committee was going on, the Deputy Chairman, many times, requested them to go back to their seats and said that he was ready to allow the division; 13 times. Is it not a painful that in this House of Elders, which is the most respected House, we saw Members going to the Deputy Chairman, almost attacking him, and, is it not true that one of the Marshalls was physically attacked? Was he not thrown away? Is it the way to behave in the House? Even after that, as you rightly said, Sir, if they express regret, the Government is not bent upon to keep them away and run the business. We are on a very strong footing, Sir. Even on this Bill, I don't want to go into the merit of this Bill, but all parties have promised in their manifestos, including Bhartiya Janta Party...

MR. CHAIRMAN: No, no, don't go into it.

SHRI PRALHAD JOSHI: I am not going into it. That itself is there. But in spite of that, we are ready for the discussion because we are on a very strong footing. And, last point, Sir.

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, please allow us also.

MR. CHAIRMAN: I have already called the Leader of the House. He was on his legs.

SHRI PRALHAD JOSHI: Sir, let me just finish. Another point is, when they are talking about the numbers, on that day particularly, in our favour it was 110 and in their favour, it was 72, which can be proved again. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Right. ..*(Interruptions)*.. That is different. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, we also want to speak. He is saying ...*(Interruptions)*...

SHRI PRALHAD JOSHI: And, Sir, ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please conclude. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRALHAD JOSHI: If he feels that it is incorrect, I will ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, please allow us also. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please sit down, Praful ji. I will call you. ...*(Interruptions)*... I will call you.

SHRI PRALHAD JOSHI: Sir, if you say, I will withdraw it. I don't have any prestige issue on that. But I can very confidently say that we had the numbers and we were ready for the division also. And if they express regret and come here, today also, if there is a division, we are okay with that.

Sir, she talked about the MSP; why it is announced. Sir, it is an ongoing process. Before this also, MSP was there and now a decision has been taken when the appropriate time has come.

I would also like to say that he called it 'illegitimate', which is very, very unfortunate. I would only say that one week in the morning and one week in the evening was decided after the Speaker and the Chairman had a talk with each other. Still, if all the leaders, under your guidance, want to extend the time and discuss more, the Government is quite open. We are not running away from discussion. Once again, I appeal to them, for whatever has happened -- people went up to the Deputy Chairman, almost near him -- if they express regret, the Government is not very particular that they should be kept out.

MR. CHAIRMAN: All right, you have made that point. Let us hear first Mr. Praful and then we will come to the Leader of the House.

SHRI PRAFUL PATEL: Mr. Chairman, Sir, I was not going to speak, but after you spoke, I am feeling a little compelled to speak. My party and myself, you are aware, have never entered the Well of the House or done anything which is not in the best parliamentary traditions. We have followed that throughout. Sometimes we are misunderstood also even in the Opposition because we maintain a certain decorum in the House. Whatever happened, Sir, we agree that it was unfortunate. But considering all that, after you rose and were speaking, I felt that whatever happened in the heat of the moment, you understood the sentiments of some of the Members of the House and you, in your wisdom and in your compassion, would have agreed to withdraw the suspension of the eight Members, which happened yesterday. So, I appeal to you that it is not the question of right or wrong. We agree that when you say certain things, we take it absolutely as words of wisdom and guidance. I once again appeal to you that in the best interest and the best traditions of the Parliamentary democracy, though these incidents should not have happened in this august House, if you could consider and withdraw the suspension, it will be going a long way in building the trust deficit which has developed between the ruling side and the opposition side.

MR. CHAIRMAN: Yes, Ram Chandra Prasad Singh ji. Sorry, Leader of the House, one minute. Normally it does not happen.

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह (बिहार): सभापति जी, इमोशन्स के बारे में बोला जा रहा है। ...(**व्यवधान**)...

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, if you are not taking any decision, I may be considered to withdraw. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Whatever you want to do, you can do. ...*(Interruptions)*... When you say something, you must be ready to hear the other side also. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAFUL PATEL: No, Sir, if you are not responding, ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: I can't respond without the House accepting whatever you say.

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, please give a message ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: If you want to make your point and don't want to hear the others, I leave it to you. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAFUL PATEL: Sir, I expected you to respond. I appeal to you, Sir, ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: You were not there when I made a mention. I said it. ....*(Interruptions)*.... If they feel sorry, then it can be done. ...*(Interruptions)*...

DR. K. KESHAVA RAO: If you were...*(Interruptions)*...

SHRI PRAFUL PATEL: We withdraw from the House. ...*(Interruptions)*..

DR. K. KESHAVA RAO: We withdraw from the House. ...*(Interruptions)*..

(At this stage some hon. Members left the Chamber)

MR. CHAIRMAN: Right. ...*(Interruptions)*... Thank you. ...*(Interruptions)*... Shri Ram Chandra Prasad Singh. ...*(Interruptions)*... Keshava Rao ji, then it will be unending. ...*(Interruptions)*... Dharmendra ji. ...*(Interruptions)*... Anybody who makes a speech or

suggestion must wait for others also to speak and hear their suggestions, and then if you are not satisfied with the Government response, you can protest. If you say 'what I say everybody must hear and I will not hear others,' this is not fair. And then you make an appeal to the Chair. The Chair can go by the mood of the House or what is proposed before me. Even later I cannot. I would have advised the Minister for Parliamentary Affairs provided the Member shall not have gone on record justifying their action. Shri Ram Chandra Prasad Singh.

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह: सर, यहाँ emotions के बारे में चर्चा की गई। Emotion और intention में बहुत फर्क है। जो emotion है, वह spur of the moment में होता है। वह कुछ minutes last करेगा, कुछ घंटे last करेगा, लेकिन यह कई दिनों तक कर रहा है। सर, intention क्या था? अभी यहाँ एक माननीय सांसद थे, वे चले गए, वे division की माँग कर रहे थे। वे एक सीनियर सांसद हैं। सर, मैं तो यहाँ बैठा था, प्रसन्न जी भी थे। वहाँ जा कर वे एक बार नहीं, तीन बार, चार बार कागज फाड़ कर हरिवंश बाबू पर फेंक रहे थे। अगर वे division की माँग करते हैं, तो कम से कम order रहेगा, तब तो division होगा! वे बार-बार बोल रहे थे। सर, इसलिए intention को देखा जाना चाहिए। जिस तरह से वहाँ किया गया, हरिवंश बाबू के ऊपर slap दिखाया गया, सर, यह तो हरिवंश बाबू की शालीनता है कि कोई भी unprecedented घटना नहीं घटी। यह कोई अच्छी चीज नहीं है। आप ऐसा करें भी और ऊपर से दादागिरी भी करें! सर, आपने आदेश दिया, अगर ये लोग बात करते हैं, लोकतंत्र में विश्वास करते हैं, तो ये क्यों नहीं सदन छोड़ कर गए? तब तो आप कोई भी आदेश करेंगे, उसका पालन नहीं होगा। इतना ही नहीं, ये बाहर जाकर धरने पर बैठ गए, जैसे लगता है कि देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं। सर, यह चीज, जो intention है, उसको देखा जाना चाहिए। To err is human, वह ठीक है, लेकिन अगर गलती के पीछे आपकी मंशा गलत है, तो उसको माफ नहीं किया जाना चाहिए।

MR. CHAIRMAN: The Leader of the House. I am sorry, Thaawarchand ji, this has never happened. Once the Leader is on his legs, he must be given the chance. But I yielded because of the age and seniority of Devegowda ji. Now I am seeing a tendency...*(Interruptions)*... Some people say 'first hear me' whatever...*(Interruptions)*...

SHRI JAGAT PRAKASH NADDA (Himachal Pradesh): Then they don't listen to the ruling party.

MR. CHAIRMAN: This is not the practice. ...*(Interruptions)*... The Leader of the House.

श्री थावरचन्द गहलोत: सर, मैंने आपका आदेश शिरोधार्य किया।

माननीय सभापति महोदय, आपने नेता, प्रतिपक्ष को बोलने का अवसर दिया। उन्होंने लंबी-चौड़ी बातें करके कोशिश यह की है कि विपक्ष की कोई गलती नहीं है, बल्कि आसंदी की गलती है। यह कदापि उचित नहीं है। उस दिन की घटना को हर कोई दुखद और निंदनीय बता रहा है। एलओपी ने भी यह कहा कि वह घटना दुखद थी, अच्छी नहीं थी और जो दुखद और अच्छी घटना नहीं थी, उसको उन्होंने आसंदी के खिलाफ बोल कर सिद्ध करने की कोशिश की कि जो कुछ हुआ था, वह उचित हुआ था और आसंदी ने गलत निर्णय किया था। मैं यह उचित नहीं समझता हूँ और यह बात रिकॉर्ड में लाना चाहता हूँ। घटना की जानकारी तो सबने दे दी, मैं उसको दोहराना नहीं चाहता। मेरा भी 35 साल का संसदीय जीवन है। मैंने जीवन में इतनी दुखद घटना कभी भी नहीं देखी थी। माइक तोड़ देना, आपकी टेबल पर यहाँ साइड में आकर बैठ जाना, हरिवंश जी के ऊपर हाथ उठाना, माइक तोड़ने के साथ-साथ ही टेबल पर भी चढ़ जाना, रूल्स की किताबें फाड़ना, बिल की कॉपी फाड़ना, इस प्रकार का जो घटनाक्रम है, वह दुखद है और बहुत निंदनीय है। एलओपी ने भी इस बात की निंदा की है; दुखद है, यह भी कहा है; उसके बाद भी उन्होंने आसंदी पर आक्षेप किया, यह कदापि उचित नहीं है। आसंदी ने जो निर्णय किया, वह उचित किया है। मैं यह मानता हूँ कि आसंदी का निर्णय सर्वोपरि है। आसंदी के निर्णय की अवमानना करना उचित नहीं है।

माननीय सभापति महोदय, माननीय उपसभापति, श्री हरिवंश जी ने आज 22 सितम्बर की तारीख में आपको एक पत्र लिखा है। मैं उस पत्र को पढ़ना चाहता हूं।

श्री सभापति: नहीं, प्लीज़...**(व्यवधान)**...

श्री थावरचन्द गहलोत: सर, कृपया आप मुझे अनुमति दीजिए।...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति: नहीं, किसी दूसरे का पत्र आप नहीं पढ़ सकते। प्लीज़...**(व्यवधान)**...I can read if I want. It will be in public domain.

श्री थावरचन्द गहलोत: सर, मेरा आपसे अनुरोध है कि या तो आप मुझे इस पत्र को पढ़ने की अनुमति दें या आप पढ़कर सुनाएं।

श्री सभापति: नहीं, नहीं, आपने सुझाव दिया, यह ठीक है।...**(व्यवधान)**...

श्री थावरचन्द गहलोत: सर, कृपया मुझे अनुमति दे दीजिए।...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति: नहीं, नहीं, प्लीज़...**(व्यवधान)**... आपको जो कहना है, कह दीजिए।

श्री थावरचन्द गहलोत: उन्होंने आपको पत्र लिखकर उस घटना की जानकारी दी है, साथ ही उनके जीवन में उन्होंने अभी तक क्या-क्या किया है, उन सब बातों की भी जानकारी दी है।

उस दिन की घटना का सारा वर्णन उस पत्र में दिया गया है और आपसे आग्रह किया गया है कि इस प्रकार की घटना नहीं होनी चाहिए और इस पर कार्यवाही होनी चाहिए। सर, मैं उस पत्र को पढ़ना चाहता हूं, कृपया मुझे पढ़ने दीजिए।...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति: नहीं, प्लीज़...**(व्यवधान)**... नहीं, प्लीज़...**(व्यवधान)**.... Thank you. Now that the leader of the House has mentioned it, I would tell the House that the Deputy Chairman wrote a letter to me expressing his commitment to democracy, the way he was conducting the House, what has happened, how he was treated and then he said that there was a need to arouse the conscience of the people. ...*(Interruptions)*... मुझे क्या कहना है, यह मेरे ऊपर छोड़ दीजिए। आपने सुझाव दिया, उसको मैं जरूर देखूंगा।...**(व्यवधान)**... He said that he wants to observe, what you call, not hunger strike, but self-fast to make the Members, who have behaved in such a manner, realize and introspect. इसी आशा से उन्होंने ऐसा किया। This is the Gandhian way; this is the JP way. So, keeping that in mind, we should not make controversies; we should not try to score political points. It was also brought to my notice that आज सुबह हरिवंश जी खुद घर से चाय बनाकर लाए और जो सदस्य वहां धरने पर बैठे हैं, उन सबको चाय पिलाई। यह मानवता और गांधीवादी पद्धति केवल आज नहीं, शुरू से ही वे अपनाते रहे हैं। उनके जीवन के बारे में हम सबको मालूम है, इसीलिए सब लोगों ने अपने विवेक के आधार पर, उपसभापति के रूप में उनको चुनकर यहां भेजा। मैं जानता हूं कि उनको कितनी पीड़ा हुई होगी। बाहर उन्होंने इसकी कोई डिटेल नहीं बताई कि यहां उनके बारे-बारे में क्या-क्या बोला गया। That is why, I used the word 'yesterday'. He was not only accused but he was also abused. यह नहीं होना चाहिए। If people do not realize what they have done is wrong and if they justify it, then I leave it to their wisdom and I leave it to the wisdom of the people who are saying - नहीं, नहीं, जो हो गया सो हो गया। ठीक है, जो हो गया, हो गया। The Minister of Parliamentary Affairs also said that provided they realize it. We want the House to run. As Chairman and Deputy Chairman, we want the House to run. We want full participation, we want everybody to give their views and then finally, the House to come to a conclusion. That is why I always say, I repeat it, discuss, debate and then decide and not disrupt. This is one. Secondly, the Government proposes; the Opposition opposes; and the House disposes. But you must allow the House to dispose it. You don't allow the House to function and then create this thing. That is not a healthy trend. If you accept that, then people will start doing that. That is why I appeal to all the leaders of different parties to understand the need to maintain decency and decorum, standards and values of this great House. We are Elders' House. The scenes which are appearing on television are paining every Indian and hurting the image of this august House. Now, trying to put

[श्री सभापति]

the blame on somebody else, trying to put the blame on the Chair and trying to make it very simple as if it was concerning with only that particular Bill is not fair. So, let everybody do some introspection. Then, if there is some procedural thing, what is to be followed, that can be followed. Members are free to convey to me or bring to my notice also, I am always willing to go through that. जैसा मैंने कहा, मुझे बताया गया कि इतना सब होते हुए भी आज उपसभापति, श्री हरिवंश जी संसद परिसर में धरने पर बैठे हुए सांसदों के लिए स्वयं सुबह की चाय आग्रहपूर्वक लेकर गए। हरिवंश जी की पहल हमारे उत्कृष्ट लोकतांत्रिक संस्कारों को दिखाती है, उनकी पहल लोकतंत्र के लिए एक शुभ संकेत है। मैं अभी भी कह रहा हूं, मेरी हिन्दी ठीक है, ऐसा मैं समझता हूं। अंतत: वे हमारे सदस्य हैं, जो बाहर बैठे हैं, वे हमारे सदस्य हैं। उन लोगों को भी समझ में आना चाहिए कि उन्होंने यह जो काम किया है, वह स्वीकार्य नहीं है। पार्लियामेन्टरी पद्धति में उसको स्वीकार नहीं कर सकते। उन्होंने जो किया, उसे वे लोग set right करने के लिए पश्चाताप कर रहे हैं तो बतायें। हम आगे बढ़ेंगे, यह अच्छा होगा, लोकतंत्र के लिए अच्छा होगा। इसलिए मैं अपील करता हूं to all people, please follow the rules, regulations and try to keep up the standards of this one.

And for the sake of record, I want to further say that that day full time was allotted for discussion. The discussion was over. Mr. Deputy Chairman went on record thirteen times saying 'that he is willing to go for division if you go to your seats, if the House is in order.' Creating disorder and then asking point of order is not going to make any help. I am just reiterating that. Then, as far as the House traditions are concerned, as I told you, I am not happy to quote them. How many times Members were suspended, when, who; all those details are there for some of the people who want to make study. I appeal to the media also, please understand the issue fully. Do not try to focus only on one incident and then try to put it in such a way. Try to understand the background of the entire issue. And my duty, my worry is running the House. You make fiery speech within the parliamentary system. Attack the Government, no problem at all. ...*(Interruptions)*... The Government must respond and they would respond to their ability. You are not happy. What is the way in Parliament? Talk out, walk out or vote out; otherwise, democracy would be all out. This has to be understood by one and all. Often I have been saying this because this new tendency has come. ...*(Interruptions)*... Please understand this and see to it that everybody follows this thing.

The hon. Minister of Education was speaking about the IIIT Laws (Amendment)

Bill, 2020. He can continue and then the House would sit as long as it is necessary and then Chair would decide after taking the sense of the House. I once again appeal to all the parties, their leaders, please rethink, retrospect, come back to the House and participate in the discussion.

(MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair*)

GOVERNMENT BILLS

The Indian Institutes Of Information Technology Laws (Amendment) Bill, 2020*

शिक्षा मंत्री (श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक'): उपसभापति महोदय, कल मैंने भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2014 का और संशोधन करने वाले तथा भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान प्राइवेट, पब्लिक भागीदारी अधिनियम, 2017 का संशोधन करने वाले विधेयक को यहां प्रस्तुत किया था और मैंने कहा था कि हमारे देश में कुल 25 ट्रिपल आईटीज़ हैं और जिनमें जिन पांच को विशुद्ध तरीके से केन्द्र सरकार संचालित करती है, उनमें प्रयागराज, ग्वालियर, जबलपुर, कांचीपुरम और कुर्नूल है और जो 15 ट्रिपल आईटीज़ हैं, वे पीपीपी मोड में संचालित हो रहे हैं, वे 2017 के अधिनियम से संचालित हो रहे हैं। उपसभापति जी, हम इस बिल के माध्यम से भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान अधिनियम, 2014 की धारा 41(3) के अंतर्गत भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानों की काउंसिल की सदस्यता में उत्पन्न शाब्दिक बेमेल को समाप्त करना चाहते हैं, जिसमें एक जगह निर्वाचित के स्थान पर नामनिर्दिष्ट शब्द की स्थापना होनी है, ताकि 41(3), धारा 40 के अनुरूप हो जाए और अधिनियम में समरूपता हो जाए और इस अधिनियम की जो मूल भावना है, वह उसके अंदर समाहित हो जाए।

उपसभापति जी, 2017 का जो अधिनियम है, इस अधिनियम के तहत सार्वजनिक निजी भागीदारी में भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानों में से 15 संस्थान हैं, जिनमें श्री सिटी, चित्तूर (आंध्र प्रदेश), गुवाहाटी (असम), वडोदरा (गुजरात), सोनीपत (हरियाणा), ऊना (हिमाचल प्रदेश), रांची (झारखंड), धारवाड़ (कर्नाटक), कोट्टयम (केरल), नागपुर (महाराष्ट्र), पुणे (महाराष्ट्र), सेनापति (मणिपुर), कोटा (राजस्थान), तिरुचिरापल्ली (तमिलनाडु), कल्याणी (पश्चिम बंगाल) और लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में हैं। ये संस्थान ट्रिपल आईटी पीपीपी मोड अधिनियम, 2017 के प्रावधानों के अंतर्गत संचालित हो रहे हैं और इसी में जो 5 नए संस्थान हैं, जो कि सूरत (गुजरात), भोपाल (मध्य प्रदेश), भागलपुर (बिहार), अगरतला (त्रिपुरा) और रायचूर (कर्नाटक) में स्थित हैं और जो अभी संचालित हुए हैं। अब हम इन पाँचों को इस अधिनियम के तहत लाने के लिए आज यह प्रस्ताव सदन के सामने

---

* Further discussion continued from the 21st September, 2020.